भगत रविदास – सबद ८
संत तुझी तनु संगति प्रान ॥
रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८६

संत तुझी तनु संगति प्रान ॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥
संत ची संगति संत कथा रसु ॥
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥२॥
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥
जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥
संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥

सार:'संत' शब्द संस्कृत से लिया गया है, जहाँ 'सत्' का अर्थ है वास्तविकता और 'सांत' का अर्थ है शांति। संत सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं होता बल्कि यह एक ऐसा स्वभाव है जो दिव्यता के जीवित रूप का प्रतिनिधित्व करता है। यह अवधारणा आत्म-चिंतन की एक जाग्रत अवस्था का वर्णन करती है जिसमें शांति और संयम होते हैं जो सत्य के प्रतीक गुणों को दर्शाते हैं। एक संत का व्यवहार और कार्य सार्वभौमिक चेतना और व्यक्तिगत आत्मा के बीच एक सामंजस्यपूर्ण जुड़ाव को दिखाते हैं जो एकता के उस सार को उजागर करता है जिससे पूरी सृष्टि जुड़ती है।

संत तुझी तनु संगति प्रान ॥
सत्य और शांति का सार हमारे शरीर के भीतर निवास करता है और उससे जुड़ना जीवन- ऊर्जा का स्रोत है। यह बताता है कि आंतरिक तालमेल जागरूकता को बढ़ावा देता है जो हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व का एक अनिवार्य पहलू है।

सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥
सच्चा ज्ञान जो हमें अज्ञान के अंधेरे से जागरूकता के प्रकाश की ओर ले जाता है, वह पहचानता है कि जो लोग शांति और सच्चाई को अपनाते हैं वह सबसे अधिक प्रबुद्ध हैं, सभी देवताओं में सर्वोच्च देवता हैं। यह अंतर्दृष्टि इस बात पर ज़ोर देती है कि ज्ञान और पवित्रता किसी पद के क्रम पर आधारित नहीं हैं बल्कि सत्य की एक साँझा खोज है। (१)

संत ची संगति संत कथा रसु ॥
जागृत विवेक, शांत और सत्यनिष्ठ चेतना की संगति पोषित करने योग्य आध्यात्मिक संवाद प्रदान करती है। यह बताता है कि सच्चा बोध, केवल सैद्धांतिक अवधारणाओं से नहीं बल्कि जीवन के अनुभवों से उपजता है।

संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥
हे समस्त स्रोतों के स्रोत, मुझे उस प्रेम का दान दो जो शांति और सत्य की अनुभूत अवस्था से जुड़ा हो। यह विवेक को सांसारिक भ्रमों के बजाय ज्ञान के साथ जोड़ने की आकांक्षा को दर्शाता है। (१)(विराम)

संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥२॥
मेरा आचरण एक प्रबुद्ध विवेक के अनुरूप हो। मेरा जीवन एक शांत स्वभाव को दर्शाता हो और मैं एक सच्चे मन की सेवा के लिए समर्पित रहूँ। यह हमारे कार्यों, जीवन शैली और इरादों को सार्वभौमिक ज्ञान के सिद्धांतों के साथ एकीकृत करने के महत्व पर ज़ोर देता है। (२)

अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥
मैं भक्तिपूर्ण चिंतन का एक और गुण चाहता हूँ अपनी आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए। 'चिंतामणि', प्रतीकात्मक इच्छा पूरी करने वाले रत्न का यह संदर्भ, यहाँ सार्वभौमिक ज्ञान के साथ जुड़ने की गहरी खोज के लिए एक रूपक के तौर पर कार्य करता है।

जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥

विवेक को जागरूकता की कमी या नकारात्मकता के संपर्क में आने से बचाएं। यह ऐसे नकारात्मक व्यवहारों से जो मन को द्वैत और अज्ञानता की ओर ले जाते हैं, उनसे एक सुरक्षात्मक सीमा का सुझाव देता है। (३)

रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥

रविदास कहते हैं कि जो सार को समझते हैं, वह जागरूक और प्रबुद्ध होते हैं। यह पुष्टि करता है कि सत्य को केवल बौद्धिक अटकलों के बजाय प्रत्यक्ष बोध और अनुभव के माध्यम से ही सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है।

संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥

अनुभवी प्राणी और अनंत सर्वव्यापी चेतना के बीच कोई भेद नहीं है। यह अद्वैत के सत्य को दर्शाता है कि जब अहंकार विलीन हो जाता है तब व्यक्ति को पता चलता है कि व्यक्तिगत चेतना और सार्वभौमिक चेतना एक ही हैं। (४)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास, 'चिंतामणि' शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जो इच्छा पूरी करने वाले एक प्रतीकात्मक रत्न का प्रतीक है, ज्ञान की ओर ले जाने वाले गुणों को विकसित करने की परिवर्तनकारी शक्ति को दिखाने के लिए। यह रूपांतरण केवल नैतिक गुणों तक सीमित नहीं बल्कि जाग्रत चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति है। शांति, सच्चाई और उन लोगों की सेवा के प्रति यह झुकाव जो शांति और धर्म का प्रतीक हैं, गहरी आध्यात्मिक संतुष्टि को बढ़ावा देता है। वह नकारात्मकता को पहचानने और व्यवहार को समझने के महत्व पर भी ज़ोर देते हैं, निंदा के लिए नहीं बल्कि अंतर्दृष्टि के विकास के लिए। इस एहसास के माध्यम से, प्रबुद्ध आत्मा अनंत चेतना में विलीन हो जाती है जिससे हर पल एकता, शांति और दिव्य उद्देश्य से भर जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com